C.W

Paper-1 (B.A-I) ~~7.04.2021~~

7.04.2021 History of Ancient India

वैदिक युग का महत्व

Dr Deepak Kumar Rajak
Guest professor
S.R.A.P College.
Bara Chakiya

Date :- 24.02.2022

(1) उत्तर भारत के सामाजिक एवं सांस्कृतिक संरचना के विकास में वैदिक सभ्यता का प्रत्यक्ष योगदान रहा। फिर वैदिक संस्कृति का प्रसार दक्षिण भारत तथा भारतीय उपमहाद्वीप के अन्य भागों में भी हुआ। इस प्रकार एक दृष्टि से सम्पूर्ण भारतीय समाज तथा संस्कृति के विकास में इस सभ्यता का योगदान रहा है जैसा कि हम जानते हैं कि वैदिक विचारधारा के प्रसार के साथ भारत में महापाषाणिक संस्कृति का प्रभाव कम होने लगा।

(2) हड़प्पाई लोगों के विपरीत वैदिक आर्यों की दृष्टि लचीली थी तथा उनमें विस्तार की अदम्य आकांक्षा थी। उन्होंने देशी तत्वों के साथ संघर्ष ही नहीं किया वरन् देशी संस्कृति के साथ सामंजस्य भी स्थापित किया। वे मुख्यतः पशुचारक थे किंतु पूर्ववर्ती भारतीय संस्कृतियों के साथ सम्पर्क के परिणाम स्वरूप इन्होंने कृषि पेशे को अपना लिया था। फिर आर्यों के द्वारा गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र में कृषि का प्रसार किया गया। बेहतर किस्म के हथियारों एवं रथ के माध्यम से इन्होंने अपने शत्रुओं पर विजय पायी तथा प्रकृति एवं जीवन के साथ संघर्ष कर व्यक्तित्व का विकास किया।

(3) वैदिक ग्रंथों के अध्ययन के पश्चात यह प्रतीत होता है आर्यों की दृष्टि आशावादी एवं प्रगतिशील थी। वैदिक आर्य जैसे-जैसे पूरब की ओर बढ़ते गए वे पश्चिम के क्षेत्र को भूलकर वर्तमान के साथ अपना संबंध जोड़ते गये। वे जीवन के गीत गाते थे मृत्यु की चर्चा कभी नहीं करते केवल शत्रुओं के परिक्षेत्र को छोड़कर यही वजह है कि

1000 वर्षों के अंदर ही वैदिक आर्यों का प्रसार उत्तर-पश्चिम से संपूर्ण उत्तर भारत में हो गया।

(4) भारत की आधारभूत राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक संस्थाओं का निर्माण वैदिक युग में ही हुआ। इस काल में राजतंत्र तथा नौकरशाही का आरंभिक रूप विकसित हुआ। वर्ण तथा जाति पर आधारित समाज का आधारभूत ढाँचा भी इस काल में ही अस्तित्व में आया। फिर भी इस काल में सामाजिक समानता का तत्व अधिक प्रबल रहा क्योंकि सामाजिक विभाजन का आधार पेशा था न कि जन्म। उसी प्रकार परवर्ती काल की तुलना में महिलाओं की दशा भी कहीं अच्छी थी यही वजह है कि कतिपय आधुनिक सुधारकों ने भी वैदिक समाज को एक आदर्श समाज के मॉडल के रूप में ग्रहण किया।

(5) वैदिक आर्यों के खान-पान एवं रहन सहन ने भी भारतीय सामाजिक जीवन को प्रभावित किया। वैदिक सभ्यता से पूर्व की संस्कृतियों में पशु-पालन का मुख्य उपयोग मांसाहार के लिए था। किंतु वैदिक आर्यों ने मांसाहार के साथ-साथ दुग्ध उत्पादन पर विशेष बल दिया तथा दुग्ध निर्मित विशेष वस्तुओं का उपयोग करते रहे। आगे भी यह प्रवृत्ति बनी रही।

(6) अगर हम वैदिक धर्म पर दृष्टिपात करते हैं तो हमें यह ज्ञात होता है कि वैदिक आर्यों की दृष्टि इहलौकिक थी क्योंकि उनकी उपासना का उद्देश्य था भौतिक सुखों की प्राप्ति मोक्ष नहीं। यही वजह है कि वैदिक धर्म ने 19वीं सदी के भारतीय धर्म सुधारकों का ध्यान आकर्षित किया। ये सुधारक वैदिक धर्म का दृष्टांत देकर हुआ-छूत एवं मूर्ति-पूजा जैसी कुरीतियों पर प्रहार करते रहे।

C.W ~~[illegible]~~ ~~[illegible]~~

paper - IV

Date: — ~~[illegible]~~

Date - 24.021 2022

History of Modern Europe

Dr Deepak Kumar Ram
Guest professor
S.R.A.P. College, Muz

अमेरिकी क्रांति

Q. अमेरिकी क्रांति वणिकवाद के विरुद्ध आर्थिक विद्रोह थी। इस कथन की पुष्टि कीजिए।

Ans. अमेरिकी क्रांति राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए आंदोलन मात्र नहीं थी अपितु एक आर्थिक क्रांति भी थी। इसने उन वणिकवादी अवधारणा को अस्वीकार कर दिया कि उपनिवेश मातृदेश के हित के लिए बने रहता है चूँकि यूरोपीय मध्यवर्ग के द्वारा भी वणिकवादी नीति का विरोध किया जा रहा था इसलिए अमेरिकी स्वतंत्रता आंदोलन ने एक मध्यवर्गीय क्रांति का रूप ले लिया।

1776 में ही एडम स्मिथ के द्वारा के द्वारा वेल्थ ऑफ नेशन्स का प्रकाशन जिसमें वाणिज्यवाद को अस्वीकार किया गया था। तथा अमेरिकी स्वतंत्रता आंदोलन का साथ-साथ घटित होना महज संयोग नहीं हो सकता अपितु दोनों का संबंध वणिकवादी नीति के विरोध से था। अमेरिकी विद्रोहियों को 17वीं सदी के नौपरिवहन कानून के विरुद्ध गहरी आपत्ति थी। ये कानून वणिकवादी नीति के क्रियान्वयन का ही प्रयास था। वस्तुतः 1651, 1660, 1666, तथा 1673 में लाए गए कानूनों का लक्ष्य था अमेरिकी व्यापार को पूरी तरह ब्रिटिश औपनिवेशिक हित के अधीन करना। इनमें कई तरह के प्रावधान निहित थे - उदाहरण के लिए अमेरिकी बस्तियाँ केवल ब्रिटिश अथवा अमेरिकी जहाजों में ही वस्तुओं का आयात निर्यात कर सकते थे